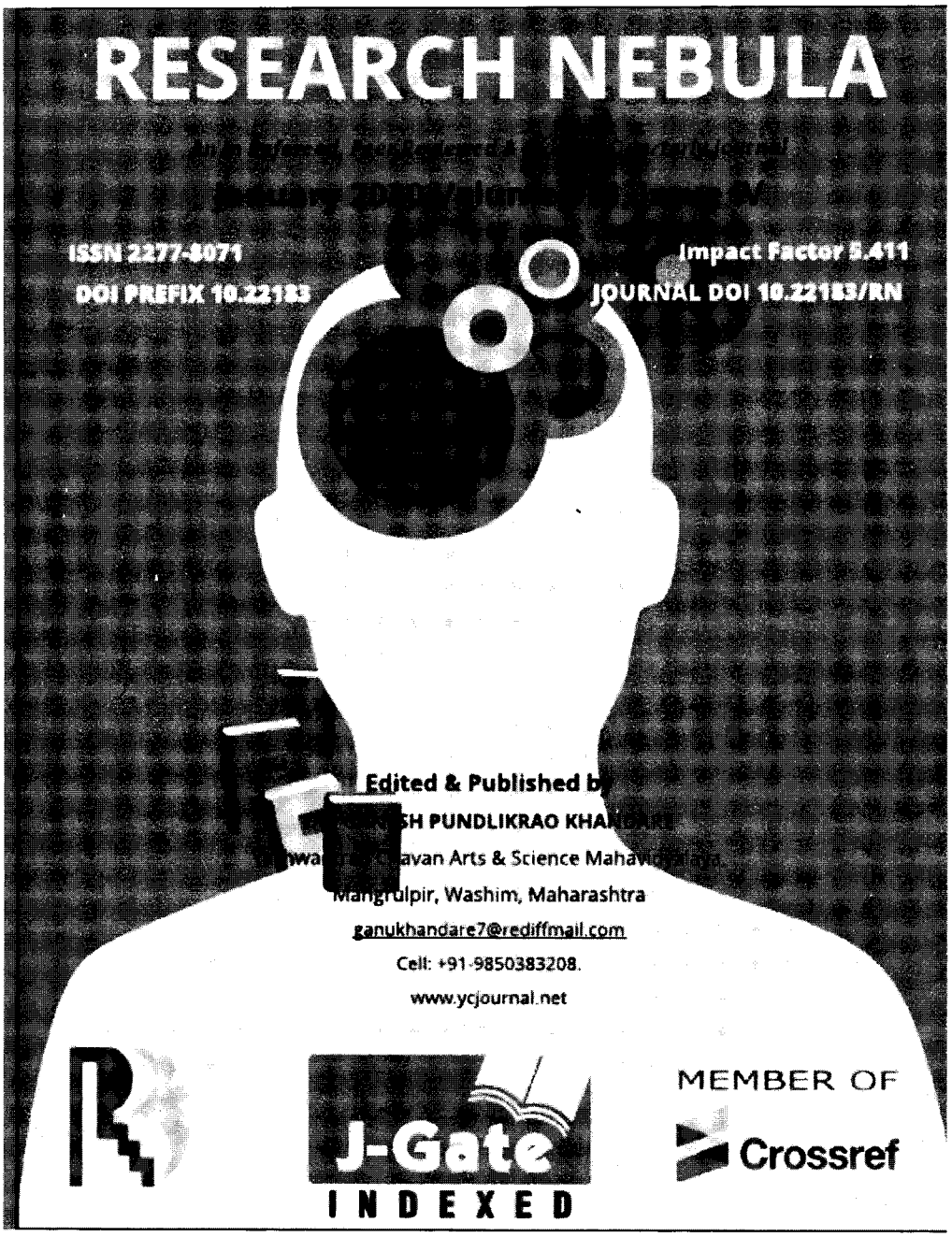

PRINCIPAL
Shivaji College, HINGOLI

SHIVAJI COLLEGE

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071
Impact Factor 5.411

Research Paper in Hindi

RESEARCH NEBULA AN INDEXED, REFEREED & PEER REVIEWED JOURNAL · MEMBER OF Crossref · OPEN ACCESS · INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor · doi

वृध्दावस्था की त्रासदी का यथार्थ उपन्यास-'समय सरगम'

डॉ. सुधीर गणेशराव काळे

सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभागप्रमुख,
शिवाजी महाविद्यालय,
हिंगोली (महाराष्ट्र)

ABSTRACT

आधुनिका यथार्थवादी दुनिया में माँ बहन आदि कोई भी हो उसके वृध्द होते की उनके नीजी जीवन को परिवार में कोई मायने नही रखता। धन की तरफ निगाहे गडे रहते है।बुजूर्ग मात्र अपने परिवार के सदस्योसे त्रासदी भरा जीवन जीते रहते है। जिसके अपने परिवार है वे उनसे प्रताडित होते रहते है और जो जीवन में अकेले है वे शारीरिक व्याधियों से परेशान है। सुखी कोई भी नही। बस ! राह देखते रहते है । इस दुनिया से छुटकारा पाने की, मृत्यु को हँसते हसते गले लगाने की ।

मुख्य शब्द - नये पुराने मुल्यों की टकराहट, अपसंस्कृति का आक्रमण, मानवीय सम्बन्धों।

इक्कीसवीं सदी का साहित्य मनुष्य को अपनी वास्तविक और मूल पहचान के साथ विश्व-मंच प्रस्तुत करता है | हमारे समय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सवाल यह है कि बाहर की दुनिया मनुष्य को बनाती है या मनुष्य का भीतर बाहरी जगत को बनाता है ? इसके उत्तर खोजे जा रहे हैं | सारे बाहरी सामासिक आवरणों और प्रतिबन्धों के बावजुद मनुष्य श्रेष्ठ है और महत्वपूर्ण है, यह बात इक्कीसवीं सदी के प्रथम दो दशक के साहित्य में उभरकर आ रही है | सृष्टी और संसार के परिचालन में कीरी कुंजर से लेकर बच्चों, स्त्रियों, दलितों, वनवासियों, कृषकों, मजदूरों और किन्नरों तक की भूमिका रेखांकित हो रही है | विकलांगो के जीवन के दर्द और जिजीविषा को शब्द देने वाला साहित्य भी हमारे सामने आ रहा है | अत: इक्कीसवीं सदी का आरंभिक साहित्य उपेक्षितों, दलितों, शोषितो, तिरहकृतो, अनचीन्हितों को समाज और राष्ट्र की मुख्यधारा से जोडने की भूमिका का है |

मनुष्य का सौन्दर्य बोध उतना ही विराट हैं, जितनी सृष्टी | उसने सारी सृष्टि को वासना वासुदेवस्य का रुप समझा। चर-अचर सभी में सौंदर्य की उद्‌भवना के फलस्वरुप ही साहित्य, संगीत, वास्तुकला, मुर्तिकला और चित्रकला का प्रतिफलन हुआ | ये समस्त कलाएँ मानव संस्कृति के विकास के विभिन्न स्तर और स्वरुप ही हैं | सौंदर्य के प्रति यह ललक और कला में उसका रुपान्तरण मनुष्य की सर्जनात्मक प्रकृति का प्रमाण है | ये कलारुप सौन्दर्य की अभिव्यक्ति के साधन भी है | औद्योगिक क्रांति, सूचना क्रांति और जन संचार माध्यमों के अनियंत्रित प्रसार और आकर्षण से साहित्य की सामूहिक प्रवृति भी प्रभावित हुई है| गॉवो की साधनहीनता गॉवो की उपेक्षा, गॉवो का उजडना, नगरीकरण की सघनता और विस्तार तथा नये नये उद्योगों की स्थापना ने सामाजिक जीवन को नये स्वरुप में दाला | यह नवा स्वरुप अपनी जडों से बढने का दु:ख और आधुनिक जीवन जीने के आकर्षणों और आर्थिक प्रथकों की संघर्ष की कहानी कहता है | इक्कीसवीं सदी के साहित्य दर्पण में इसके अनेक रुप और बिम्ब, प्रतिबिम्ब हमें दिखाई देते है | साहित्य दृश्यबिंबों की संस्कृति निर्माण करता है ।यही दृश्य बिंब साहित्य को अधिक जीवंत, अधिक सार्थक बनाता है।[1] शिक्षा के प्रसार और समाज स्तर पर नयी समाज बदल से रुढियों का खण्डन और युग अनुरुप नये तर्क सम्मत जीवन बोध ने इक्कीसवीं सदी के साहित्य के व्यक्ति को नवी ऊर्जा और वैश्विक संवेदना के संग साथ चलने को तैयार किया |हिन्दी उपन्यास साहित्य न केवल बहुआयामी होकर विकसीत हुआ, अपितु शिल्प, शैली, रूप, गठन आदि में उपन्यास नित्य नया रूप लेता रहा। इस समय हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में अनेक महान प्रतिभाओं का उदय एक साथ हुआ।

समकालीन महिला कहानीकारों में आधुनिक लेखन के कारण अपनी अलग पहचान बनाई है वह उपन्यासकार है 'कृष्णा सोबती' | 21 वी सदी के हिन्दी

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

DOI PREFIX 10.22183 JOURNAL DOI 10.22183/RN | An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences | ISSN 2277-8071 Impact Factor 5.411

जगत की महिला उपन्यासकारो में कृष्णा सोबती का नाम प्रथम लिया जाता है। उनका उपन्यास 'समय - सरगम'2000 में प्रकाशित हुआ। यह एक पिढी विशेष पर केंद्रित उपन्यास है। बुढ़ों की शिकायतो का दस्तावेज है। समय - सरगम एक वह उपन्यास है जिसमें बदलते समय के अनुसार व्यक्ति के बदलते संगीतमय जीवन का गान है। एक संगीतकार जिस प्रकार आपने संगीत से सुख और दुखमय ध्वनियों को प्रदर्शित करता है, उसी प्रकार कृष्णा सोबती ने इस उपन्यास से परिवारों में बुढों के जीवनमय संगीत को लिपिबध्द किया है । इसमें नये पुराने मुल्यों की टकराहट की गुंज है, दो पीढियों की अनबन है, परिवार मे वृध्दो की त्रासदी है फिर भी जीवन जीने की ललक और जिजीविषा उनमे दिखती है। कृष्णासोबती का यह उपन्यास आज भी प्रासंगिक लगता है। समाज के परिवारों में जीवित होता दिखाई देता है। बुढापे मे व्यक्ति के जीवन में आनेवाली कठिनायाँ, खान- पान विशेषकर शारीरिक त्रासदियों को स्थापित करने की उलझने प्रस्तुत की गई है।

'समय - सरगम' उपन्यास में प्रमुख पात्र 'अरण्या'और 'ईशान' है। बहु - बेटे और माँ-बाप के रिश्तो में बनती दरारे उसमें भी सुख दुःख की कोशिश में लगे वृध्दा की आशाएँ प्रस्फुटित होती है। उपन्यास की पात्र अरण्या के माध्यम से बुढो की जिजीविषा को उभारने की कोशिश की है। उपन्यासकार ने यहाँ आरण्या के बहाने त्रासदियों मे भी सुख ढूँढने की कोशिश करती वृध्द स्त्री को चित्रित किया है। ढलते उम्र मे आदमी बुढा जरूर लगने लगता है, परंतु जब वह उपने उम्र को अपने अनुभव और जीवनपर हावी न होने दे तो इस बुढापे की परेशानियों से दुर हट सकता है। तन से वह बुढा जरूर रहेंगा परंतु मन से वह सदा जवान बनकर जीवन का लुत्फ उठा सकता है। अरण्या के पुरर्जन्म पर विश्वास नही है। वे मानती है कि व्यक्ति के रोज के सँवरने मे ही उसका पुनर्जन्म है - " जितनी बार अपने को सँवारना नया करना , उतनी बार पुनर्जन्म ..."[3] शहरी जीवन के भागदौड में रहनेवाली अरण्या एक लेखिका है। अपने कुछ भी न कर पाने की आयु मे शारीरिक बिमारियो से दुर रहने के लिए दवाईयाँ और रोज सैर करके अपने बुढे होने के अहसास को भुलकर रोजमर्रा की जिंदगी को जीती है। अरण्या ऐ ऐसी स्त्री है जो अपनी नीजी जीवन में बिलकुल अकेली है। वह अविवाहित बुजुर्ग है। वृध्दावस्था में भी अपनो के लिंए सहारे की जरूरत कभी महसुस न होने दी।

आज का युग तेजी से बदल रहा है। इस बदलाव के कारण किसी के पास किसी को देने के लिए समय ही नहीं है। आज के भाग दौड भरे जिंदगी में बुजुर्ग स्त्री का ऐसा चित्रण भी मौजूद है कि किराये से घर देखने पर कोई भी घर मालिक उसके एकहरे जीवन से उसे किराये से कमरा नही दे पाता। अकेले वृध्द की रिस्क कोई भी उठाना नही चाहता है। घर मालिक उसके वृध्दावस्था और अकेले समझते ही डरने लगता है कि क्या पता ? वह कब मरजाएँ और कोई आपत्ति सर पर आ बैठे ।

सारा जीवन नौकरी और इसबच्चों के भविष्यके की चिंता में बिताने के बाद आखरी पडाव में पत्नि भी साथ न रहने का दुख अलग ही होता है। उपन्यास में ऐक बुजुर्ग पुरूष पात्र भी है जो एक रिटायर्ड अफसर है। कम समय मे उनकी पत्नी स्वर्ग सिधर जाती है। एक लडका था वो भी उपघात में चल बसता है। दो लडकियाँ है जो दूसरे शहर मे पढती है। ईशान ही वे बुजूर्ग जिन के जीवन की वे परशिनियाँ है।

अरण्या का रिटायर्ड अफसर से परिचय होता है। प्रतिदिन मीलने से उनकी पहचान बढती है। अराण्या के साथ दोस्ती होने पर दोनो साथ में रहने लगते है। और रोज सुबह - शाम टहलने जाया करते है। तनहाई भरे जीवन को भूलने का बहाना करते हुए जीवन के रास्ते काँटते रहते है । कृष्णाजी ने यह चित्रित करने की कोशिश की है कि वृध्दावस्था मे अगर कोई सहारा मिलजाए अंदरूनी बातों को आदान - प्रदान का अवसर मिलजाए तो बूढे अपना अंतिम पडाव सुकून से पूरा कर सकते है।

सारा जीवन मेहनत कर बच्चों के लिए जीने के बाद जीवन के आखरी पडाव में सहारे की आवश्यकता लगती है। उपन्यास मे अरण्या का संकट यही है कि वह जीवन भर अकेली रही है। उसकी जिंदगी का

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

153 152 148

DOI PREFIX 10.22183 | An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly | ISSN 2277-8071
JOURNAL DOI 10.22183/RN | Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences | Impact Factor 5.411

आख्यान आस्तित्ववादी है। जिसमें स्त्रीवाद का समुचा नारी विमश मौजूद है। उपन्यास में अन्य पात्र भी है। दमयंती , कामिनी आदि सब को बुढापे ने घेर रखा है। उनका एक अपना नीजी परिवार होते हुए भी जिवन मे निकांत अकेले है । उनके हि परिवार वाले उन्हे परेशान करते रहते है। उनका बैंक बैलंस ही परिवार वालों के लिए सब कुछ है।

उम्र के साथ मानव बदलाव नहीं करना चाहता। नये पीढी के बच्चों का बुजुर्गों के प्रति देखने का नजरीयां बदलता है। वे हमेशा अपनी पसंद के कपडों में माँ बाप को देखना चाहते है। इस उपन्यास में दमयंती का लडका उसे रोज डराता धमकाता हैं। उसके नीजी जीवन पर हक बनाते रहता है। यह न पहनो, वह न पहनो दमयंती शिकायत करते हुए कहती है - " मेरे बेटो और बहुओ की सुनो। रेशम पहनु वो कहते है, इस उम्र यह चमक- रमक अच्छी नही लगती । सुती पहनूँ तो वह भी पंसद नही । कहते है इनमें आप हमारी मॉ ही नही लगती । " [4]

आधुनिक बच्चे अपने आचरण के समान माता-पिता का आचरण नही चाहते वे उनकी निजी स्वंतत्रता को छीनते है। उनसे केवल धन की अपेक्षा करते है। पढी लिखी पीढि माता- पिता के आस्तित्व को नही समझती, धन हि उनके जीवन की अभिलाषा है। अंत मे दमयंती आत्म शांती के लिए अध्यात्म की शरन लेती है।

कामिनी इस रचना की एक पात्र है। वह अविवाहीत वृध्द स्त्री है। मेहनत से जीवन मैं सपंत्ती जुटाती है। किंन्तु उसके वृध्द समय में बिमारी के कारण भाई उसकी संपत्ती के कागज ही चूरा लेते है। जिसे अपने नाम से करते है । कामिनी को पता चलते ही वह कुंण्ठा ग्रस्त हो जाती है। उसकी नीजीदायी खुकु भी उसके संपत्ती से कुछ हिस्सा पाना चाहती है। खुकु कहती है- " साहिब, मेमसाहिब का कुछ रहनेवाला नही। भाई लोग घर बेच चूके है॥ मेरे पास इनके हाथ का कागद होता तो मेरे भी दस-बीस हजार बन जाएँगे । " [3]

कृष्णजी नें यहाँ दिखाया है कि बूढो की इतनी दूर्दशा हो रही है कि खुंकु जैसे सामान्य स्त्री भी संपत्ती के लिए अपने मालिक का भला नही सोचती। उनका आचरण गिरा हुआ बनता है।

आधुनिका यथार्थवादी-दुनिया में माँ बहन आदि कोई भी हो उसके वृध्द होते की उनके नीजी जीवन को परिवार में कोई मायने नही रखता। धन की तरफ निगाहे गडे रहते है। वृध्द मात्र अपने परिवार के सदस्योसे त्रासदी भरा जीवन जीते रहते है।

जिसके अपने परिवार है वे उनसे प्रताडित होते रहते है और जो जीवन में अकेले है वे शारीरिक व्याधियों से परेशान है। सुखी कोई भी नही। बस ! राह देखते रहते है । इस दुनिया से छुटकारा पाने की, मृत्यु को हँसते हसते गले लगाने की ।

अंततः कहा जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी के साहित्य की मूल प्रवृत्ति परिघि पर छिटके मनुष्य को केंन्द्र में लाने की है, अलग अलग विधाओं के रचनाकार साहित्य के लिए नये विषयों की खोज की है। अपसंस्कृति के आक्रमण ने अपने नाखुनों से हमारी सांस्कृतिक जडों को खोदना आरंभ किया हमारा जो कुछ मौलिक और सुरक्षित था, वह छीना जाने लगा सांस्कृतिक अधकचरेपन में जीने के लिए नयी पीढी विवश होती चली गयी | एक विक्षोभ घट में घुस आया |

आज मनुष्य समाज और राष्ट्र जीवन में रहते हुए भी बहुत बिखरा बिखरा सा है | उसके अपने ही मकडजाल में फॅसते चले जाने का परिणाम यह हुआ कि मानवीय सम्बन्धों की नयी और संवेदना बी जमीन सूरवती चली गयी सूखी धरती पर कुछ नहीं उग सकता न ही उपज सकता | उस स्वकेन्द्रित और टूटते मनुज बी भी दरद कथा इक्कीसवीं सदी का साहित्य कहता है |

संदर्भ-

1. यादव सतीश, हिन्दी के कालजयी उपन्यास, ववविकास प्रकाशन कानपुर, प्र.स. 2010 पृष्ठ - 26

PRINCIPAL SHIVAJI COLLEGE Hingoli Dist. Hingoli

DOI PREFIX 10.22183 JOURNAL DOI 10.22183/RN	An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences	ISSN 2277-8071 Impact Factor 5.411

2. जाधव वंदन, रामदरश मिश्र के उपन्यास और ग्रामिण परिवेश , गोरवाणी प्रकाशन औरंगाबादख प्र.स. 2010 पृष्ठ -54
3. सोबती कृष्णा, 'समय - सरगम'राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली सं-2008 पृष्ठ -13
4. वही - पृष्ठ-72
5. वही - पृष्ठ - 99

T.C.

Assistant Professor
Shivaji College, Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli